Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Volume-3, Issue-4, Oct-2013 Available online at www.aygrt.isrj.net

प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी चेतना पीली आँधी के संदर्भ में

पारखे शंकर शंकर

शोध छात्र, जे.जे.टी. युनिर्व्हसिटी –ुन–ुनू, राजस्थान

ÃÖÖ¸Ö¿Ö :- वैश्विक साहित्य के केन्द्र में स्त्री-पुरुष का संबंध रहा है। यह संबन्ध अधिक जटिल, सूक्ष्म और संवेद्य होता है। इसीलिए, संवेदनशील रचनाकार का रु–ान इस विषय में अधिक होता है। हमारी भारतीय संस्कृति ´Öë ÃÖ¤üÖ¾Ö ÃÖê पुरुषों का वर्चस्व रहा है। जैविक भिन्नता के कारण औरत की ऐसी मानसिक-बनावट की गयी है कि वह देहिकता के परे आ ही नहीं सकी। आज तक वह 'भोग्या' या पुरुषों की 'ÃÖ´¯Ö×¢Ö' बनी हुई है। उसके शोषण से ही भारतीय परिवारों का अस्तित्व बना हुआ है। कहना यूँ चाहिए कि उसके ही खून-पसीने से घर बनता है। लेकिन, अब समय बदला है। समाज के प्रतिमान बदले हैं। औरत अपनी अस्मिता, अस्तित्व के प्रति सजग हुई है। अतः साहित्य में भी उसको व्यक्ति की गरीमा प्रदान करने की कोशिश की जा रही है। पुरुष रचनाकार, अपनी रचना में स्त्री के प्रति भले ही न्याय कर ले मगर व्यवहार में प्रायः नहीं कर पाता। पारम्परिक सामन्ती दृष्टि उस पर हावी हो जाती है। अगर रचनाकार स्त्री है, नारी-चेतनासम्पन्न है तो यह उम्मीद जरुर की जा सकती है कि वह स्त्री का चिंत्रांकन अधिक मानवीय रूप में करेगी और उसे वह हक दिलाने की पहल करेंगी, जिससे उसे सदियों से वंचित किया गया। प्रभा खेतान का लेखन इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है।

प्रस्तावना-

प्रभाजी का लेखन आनुभूतिक होता है। वह पहले जीवन में सच का साक्षात्कार करती है, तब साहित्य में। यही वजह है कि उनकी हर रचना आत्मसाक्षात्कार की एक प्रक्रिया मालूम होती है। '†Ö†Ö ¯Ö¯Ö 'Ö¸ü "Ö»Ö' 'x"®Ö´ÖÃÖŸÖÖ', 'अग्निसंभवा' †Ö¸ü 'तालाबन्दी' कोई भी उपन्यास क्यों न हो, सभी में लेखिका की उपस्थिति का पूरा-पूरा बोध होता है। ये उपन्यास, आत्मकथात्मक उपन्यास भी कहे जा सकते Æî…

प्रभा खेतान की विचारधारा के मूल में सार्त्र का अस्तित्ववादी दर्शन है। 'द सेकेण्ड सेक्स' की लेखिका सिमॉन द बउवा का भी उन पर प्रभाव है। अतः उनके रचनात्मक संवेदन का महत्वपूर्ण बिन्दू '†Ö¸üŸÖ' है। यह औरत बन्द मारवाडी समाज की होती है, क्योंकि लेखिका का ताल्लुक इसी समाज से रहा है। इसकी जडताओं, संकीर्णताओं और पुरुषों के सामन्ती आचरण को भी औरतों को –ेलना पडता है, ¾ÖÆü '"®Ö´ÖÃÖŸÖÖ' की प्रिया हो, '†Ö†Ö ¯Ö¯Ö 'Ö¸ü "Ö»Ö' की प्रभा हो, या '¯Öß»Öß †Ö¬Öß' की पद्मावती या सोमा। कुछ इन सबका अतिक्रमण कर, 'Ã¾ÖÖ´Öß' पुरुष का त्यागकर अपना व्यक्तित्व भी निर्मित करती है। नारी-

समस्याओं की यह पडताल लेखिका ने विदेशी भूमि पर भी की है। '†Ö†Ö ¯Ö¯Ö 'Ö¸ü "Ö»Ö' की आइलिन, कैथी, 'अग्निसंभवा' की आइवि आदि के जरिए प्रभा ने यही अभिमत दिया है कि, आधा हिन्दुस्थान ही नही आधी दुनिया भी पुरुष शोषण की शिकार है। "†Ö¸üŸÖ कहाँ नही रोती और कब नही रोती? वह जितना रोती है। उतना ही औरतें ÆüÖŸÖß •ÖÖŸÖß Æî…" जाहिर है रोने से नसिब नही बदलेगा। अतः संघर्षशील होकर अपनी राह खुद चुननी होगी। पितृसत्तात्मक समाज स्त्री - विरोधी है। वह अपने को हानि में डालकर स्त्री को खुला आकाश क्यो देना चाहेगा? देर में सही वेल्हम की पढी सोमा को इस सच का –ान होता है।

पिली आँधी का देश काल प्रथम विश्व युध्द के बाद का है। जो आगे गतिशील होकर स्वातंत्र्योत्तर स्थितियों का प्रगटीकरण करता है। बदलाव केवल राजस्थान में ही नही, बंगाल आदि सारे प्रांतो में होता है। उपन्यास में औरतों की कुल चार पिढियाँ सक्रिय है। पहिली, दुसरी पीढी मारवाडी बनियों की व्यथा-कथा ही निरुपित है। औरत तो उस व्यवस्था में एक

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Volume-3, Issue-4, Oct-2013 Available online at www.aygrt.isrj.net

पुर्जा मात्र है। उसकी महज उपस्थिति है। उसकी समस्याओं पर अलग से चिंतन विश्लेषण नही हैं। काकोजी के साथ वृध्दा सेठानी हो, रामेश्वर भाया की टी.बी. ग्रस्त मरती-खपती पत्नी हो, या किशन की पत्नी राधा हो।

तिसरी पीढी की पद्मावती जो दकियानूसी परम्परोओं रीति रिवाजाओं की विसंगतीयों को शिद्दत से महसूस करती है। किन्तु घरकी चौखट को लाँघने का दुःसाहस नही कर पाती, क्योकिं हिंदू स्त्रियों के लिए सती होना असान है। किन्तु अपनी इच्छाओं, आकांक्षाओं को प्रगट करना दुष्कर है।

चौथी पीढी सोमा की है। उसका परिवेश दिल्ली और कलकत्ता रहा है। पीली आँधी आती है और जडियाये रिश्तों को जो रेत के ढूह हो चुके है, उन सबको उठा फेंकती है। कुछ रिश्ते अपनी तिक्तता का बोध कराते है। तो कुछ सुखद लगते है। सोमा हीरे, पन्ने, जवाहरात और उनसे पनपती कटुÿÖÖ†Ö ÃÖ ´ÖŒÿÖ ÆÖÿÖß 'मिनख' के प्यार को ही सबकुछ सम—ÖÿÖß है। उसके लिए मान सम्मान और तमाम सुखोपभोग के साधन हेय है। वास्तव में इन्सान पदार्थ की लढाई में भलेही जीत जाय किन्तु, अपनी संवेदनÖ, ‡"”Ö, आकांक्षा पर विजय पाना आसान नही होता। लेखिका का यह विचार है कि अपनी संवेदना, इच्छा को कुचल देना जीवन को ही मार देना है। 'जीवन' जीने की चीज है। इसी सोच का उदय जब सोमा के मानÃÖ ´Ö होता है। तो बडी माँ के अनुशासन, दुलार, रुंगटा हाउस के सुख दुःख सबको छोडकर सीढियों से उतर जाती है। सुजीत सेन के सानिध्य में उसमें जीवन का स्पंदन होता है। वह स्वामी पुरुष (गौतम) को छोडकर साथी पुरुष सुजीत के साथ रहने लग जाती है।

सोमा, सुजीत के माध्यम से प्रभा खेतान ने '×¾ÖÖ¾ÖÖÆ' संस्था को निरर्थक बताया है। आ—ादी के बाद के तमाम रचनाकारों - विष्णू प्रभाकर, राजेंद्र यादव आदि ने विवाह संस्था पर सवालिया निशान लगाया है। जब एक छत के निचे, एक बिस्तर पर ÆÖÿÖ Æ< ³Öß ¯ÖÿÖß-पत्नी अपरिचय बना रहे, अग्नि को साक्षी मानकर दिये गये वचनों का निर्वाह न हो तो यही संस्था व्यर्थ या दम घोटु नही है? यह सही है कि ऐसे रिश्ते महानगरों में ही नही, शहरो में भी बनने लगे है। पीठ पीछे मखौल उडाते हुए भी लोगबाग ऐसे रिश्तों को स्विकृति देने लगे हैं। फिर भी इसÖ रिश्ते का अन्तर्विरोध यह कि जी संस्था को चुनौती दि जाती है। उसी के समीकरण पर अपनाया जाता है। परिचय देने के क्रम में मसलन, सोमा के पुत्र अर्जुन की टाइटिल सेन की ही दी जाती है ताकि, वह अवैÀÖ न कहलाए।

लेखिकाने चित्रा के चरित्रो को बिल्कुल इकहरा निरुपित कर न्याय नहीं किया है। जब की उसमें द्वंद्व और तनाव की बेहद गुंजाइश थी। कोई भी स्त्री, वह भी एक बच्चे की माँ अपनी गृहस्थी और †¯Öने पति को इतने सहज भाव से नही छोड सकती। भले ही प्रेम न हो। प्रेम ऐसी वस्तू भी नही जो हर समय छलकती रहे। कुछ समय बाद पति पत्नी तो एक दुसरे की आदत बन जाते है। एक प्रश्न यह की अगर लव मैरिज करने वाले सुजीत और चित्रा के बीच प्यार नही रह जाता तो क्या सुजीत और सोमा के बीच सदैव प्रवहमान रहेगा? आश्चर्य का विषय यह की सुजीत सेन को चित्रा से प्रेम नही, अपनी संतान (²Ö™¯Öß) से तो प्रेम होना ही चाहिए था। जब की, वह भुले बिसरे भी बेटी को याद नही करता।

उपन्यास में विधवाओं के बन्द जीवन कि तडप भी रेखांकित हुई है। कठोर अनुशासनप्रिय पद्मावती के प्रेम प्रसंग की अभिव्यक्ति पन्नालाल खुराना की डायरी के जरिए कराकर लेखिकाने पद्मावती के जीवन को अधिक मानवीय, स्वाभाविक और अनुभूतिपरक बनाया है। उन्ही के माध्यम से बाल विवाह तथा विधवा जीवन की त्रासदियों को लेखिका ने सवाल के रुप में उठाया है। हमारी भारतीय समाज में गरीबी के कारण किसी बालिकाका विवाह किसी अधेड़ से हो जाना बड़ी बात नही। पद्मावती अपने अधेड़ व्यवसायी पति से संतानवती नही ÆÖ ¯ÖÖÿÖß… ¯Ö×ÿÖ की मृत्यु हो जाती है। उनके जीवन में सुराना जी आते है। बेपनाह प्यार करनेवाले अपनी पत्नी को तलाक देकर विवाह भी करना चाहते है। किन्तु, पद्मावती अपने ह्रदय के हाहाकार पर, जबरन नियंत्रण रखती हुई पति की बनायी प्रतिष्ठा और रुंगटा हाउस के माहात्म्य को बरकरार रखती है। पर प्रेम का सोता जो एक बार फुटता है, क्या वह सुख जाता है? अनपढ पद्मावती सुराना जी की डाय़री को 'गीता' की भाँति गोद में रखकर ता उम्र माला फेरती रही। उनकी यह क्रिया इस बात का प्रमाण है कि, —Ö™ß मान-मर्यादा के परे इन्सान का एक ह्रदय होता है जो प्यार के लिए धडकता है। और यह भी कि प्यार ˆडता हुआ एक पाखी है, जो कभी एक डालपर बैठ ही नही सकता।

उपन्यास में संयुक्त परिवार अपने तमाम खूबियों और खामियों के साथ व्याख्यायिक होता है। ताईजी के कडे अनुशासन में पुरे परिवार की दैनिक क्रियाये संचालित होती है। किन्तु, धीरे-धीरे उनकी पकड कमजोर हो जाती है। उनके जरिये लेखिका इसी सच्चाई का बयान करती है कि, स्वातंत्र्योत्तर समाज में संयुक्त परिवार विघटित होने लगता है... ¤¿Ô ÆB †Ô–ाद नही होता, व्यक्ति भी आ–ाद होना चाहता है ताकि उसका स्वतंत्र अस्तित्व हो। रुंगटा हाउस का एक यथार्थ यह भी है।

संयुक्त परिवार कि एक बडी न्युनता यह कि उसमें एक-दो व्यक्ति अर्थोर्जन करने वाले होते है। और बाकी खाने बहाने वाले। माधो बाबू अपने वैयक्तिक सुखों की उपेक्षा करते हुए जीतोड प्रयत्न करते है। बाप-दादों कि पुरानी साख को वापस करने के लिए। लेकिन, छोटा भाई साँवर केवल ऐश करता है। उसे काम धाम से कोई वास्ता नही।

उपन्यास में पुरुष पात्र किशन, माधो बाबू और सुराना जी तो खुदका व्यक्तित्व-विश्लेषण करते दिखाए देते है किन्तु, स्त्री-पात्रों में यह कार्यव्यापार नही के बराबर है। वेल्हम में पढी सोमा के व्यक्तित्व-ग्राफ में काफि उतार-चढाव होता है। बावजूद इसके, यह छिन्नमस्ता के प्रिया की भाँती बौध्दिक बनावट वाली महिला नहीं लगती कि अनुभवों को जीये आ¸ उससे तटस्थ होकर अनुभवों और परिस्थितिओं का विश्लेषण भी करे।

महिला लेखन की चाहरदीवारी में कैद नही रहा। कृष्णा सोबती, मन्नु भंडारी आदि लेखिकाओं ने पहले ही महिला लेखन के लेबिल को उखाड फेंक दिया है। प्रभा खेतान के उपन्यासों में व्यावसायिक जगत का अतिविस्तार से वर्णन हुआ है। व्यावसायिक कार्य भारत की धरती पर ही नही होता, लॉस एंजिल, हांगकांग, चीन आदि देशोंतक फैला हुआ है। इन सबका आनुभूतिक चित्रण, हिंदी पाठकों को अलग ताजगी देता रहा है। हालाँकि, उपन्यास पीली आँधी में वैश्विक क्षीतिज नही है तो भी राजस्थान, बिहार और पश्चिम बंगाल तक फैले मारवाडी पूँजीपतियों के व्यवसाय और उनकी अन्य क्रिया-कलापों का वर्णन तो Æ ÆB...

प्रभाजी बतौर फैशन लेखन नही करती। मसलन, आज के साहित्य के केंद्र में दलित समाज है। लेकीन, लेखिका कें साहित्य में पूँजीपति वर्ग होता है, जिसको मार्क्सने 'शोषक' कहा था और पुरी दुनिया के मजदूरोंको उसके विरुध्द खडा होने का आव्हान किया था। लेखिका के विचार में मार्क्सवादी खाँचे में ही समाज का विभाजन शोषक और शा×ÂÖŸÖ के रुप में कर, उसका अध्ययन - विश्लेषण करना उचित नही। तालबन्दी उपन्यास में ही उनका मिल-मालिकों के प्रति सहानुभूतिक नजरिया स्पष्ट होता है। इसी तरह, पीली आँधी में राजस्थानी, मारवाडी बनियÖ के उत्पीडन का, उनकी त्रासदियों का बडा सांवेदिक वर्णन हुआ है। मुखौंटो में जीना उनकी नियती है। वे नाई, ब्राम्हणों की तरह सदाव्रत की लाईन में खडे भी नही हो सकते। उनका दिसावरी के लिए निकालना, वर्षों तक के लिए बच्चे, स्त्री को छोडकर वणिक-कार्य करना और लौटने पर रजवाडों द्वारा उनका धन हडप लिया जाना या उनकी हत्या होना उनके शोषण का कारुणिक अंत है। इस तरह ऐतिहासिक सच्चाई यह कि स्वतंत्रतापूर्व के बणियों को दोहरी गुलामी –ेलनी होती थी। खुद के ऐश के लिए और अंग्रेजो कों नजराना देने के लिए रजवाडे बणियों का ही धन छिनते थे।

कोई भी लेखन तभी प्रभावित करता है... •Ô2Ô रचनाकार अपने यथार्थ, परिचित परिवेश, अनुभवों और भाषा को रचना में आनुभूतिक ढंग से प्रस्तुत करता है। प्रभाजी ऐसा ही करती है। खुद व्यवसायी होने के नाते वे व्यापारियों की मुश्किलों का ×¿Ô§ŸÖ ÃÖ महसूस करती है। और बडे व्यवसायियों के प्रति जनता की बनी आम धारणा को –ुठलाने में सफल हुई है कि व्यवसायी मात्र शोषक होते है।